मिशन शिक्षण संवाद

काव्यरूप

संस्कृत

4

काव्य निर्माण

प्रवीणा दीक्षित (स०अ०)

केजीबीवि कासगंज

पाठ- 01

वन्दना

आप तेज साकार प्रभो!
कि मुझमें भी कुछ तेज भरो।
शक्ति -शौर्य, आगार प्रभो!
कि मुझमें भी कुछ शौर्य भरो ।।

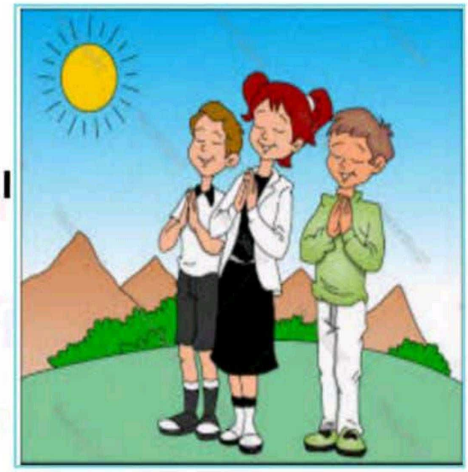

बल के हो भण्डार प्रभो!
मुझको भी बल दे दो जी,
महा ओज विस्तार प्रभो!
ओज भी भर-भर दो जी।।

हे प्रभो! आप हैं तेजवान,
मुझमें भी तो कुछ तेज भरो।
हे नाथ! वीरत्व धाम,
मुझमें भी तो शौर्य भरो।।

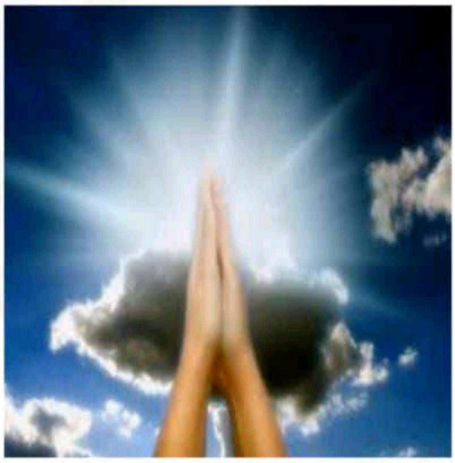

स्वामी! तुम बल के सागर हो,
मुझको भी तो बलवान करो।
हे ओजरूप! हे ओजस्वी,
मुझको भी ओज प्रदान करो।।

वन्दना

2- सौ-सौ शरदों तक देखें प्रभु,
सौ-सौ शरदों तक जीयें प्रभु।
बोलते रहें सौ शरदों तक,
कानों से अमृत पीयें प्रभु।।

3- कल्याण करें श्री सूर्य देव,
कल्याण अर्यमा और वरुण।
कल्याण करें श्री इन्द्र देव,
देवों के गुरु ब्रहस्पति भी।
कल्याण करें श्री पति विष्णू,
जय शान्ति,शान्ति,
जय शान्ति, जय शान्ति।।

* * *

पाठ- 01

आश्रम:

गुरुकुल आश्रम क्या होता है?
तुमको आज बताते हैं।
शान्त तपोवन कैसा होता?
सब को आज दिखाते हैं।।

यहाँ पढ़ाई की जाती है,
वृक्ष लगे हैं छायादार।
उनके नीचे बैठे गुरुवर,
और शिष्य सब गोलाकार।।

गणित,कृषी, विज्ञान सिखाते,
सिखा रहे हैं संस्कृत भाषा।
संस्कृत संस्कार देती है,
पूरी करती है अभिलाषा।।

आश्रम में ही हम पौधो का,
पोषण करते रहते हैं।
पौधे हमें ऑक्सीजन देते,
अपने गुरुवर कहते हैं।।

पढ़ना-लिखना और खेलना,
गुरूजन हमें सिखाते हैं।
बच्चों !आश्रम क्या होता है?
आओ तुम्हे बताते हैं।

आश्रम पाठ की अन्य रचना

देखो! गुरुकुल क्या होता है?
आओ! तुम्हें बतायें,
पहले शिक्षा कैसी होती,
तुमको हम समझायें।।

आश्रम में हो रही पढ़ाई,
पेड़ो की कर रहे सिंचाई।
देख-देख उनकी चतुराई,
गुरुजन खुश हो जायें।।

चिड़ियाँ चहक उठीं डालों पे,
कलियाँ महक उठीं बागों में।
पुष्पों के गुच्छे-बलों पर,
लहर-लहर लहरायें।।

नींबू, नीम, अशोक खड़े हैं,
कुछ छोटे, कुछ बहुत बड़े हैं।
आँधी में भी न उखड़े हैं,
इनसे धरती खिल-खिल जाये।।

संस्कृत है देवो की वाणी,
हिन्दी है भाषा कल्याणी।
शिक्षित जब होते हैं प्राणी,
तब उन्नति को पायें।।

देखो! गुरुकुल क्या होता है?
आओ! तुम्हें बतायें।
पहले शिक्षा कैसी होती,
तुमको हम समझायें।

पाठ -2

मातृदेवो भव

मुकुल नाम का एक बालक था,
एक गाँव का वासी।
उसका एक सतीश मित्र था,
सुख-दुख का अभ्यासी।1

सुनकर के बातें सतीश की,
मुकुल बहुत शर्माया।
और हास्पिटल से मैय्या,
के लिये दवाएँ ले आया।।3

हों जरूरी काम समय पर,
ही उनको निपटाना।
काम-धाम निपटा के अपना
तब ही खेलने जाना।।5

मित्र सतीश अचानक इक,
दिन पास मुकुल के आया।
तो उसने बूढ़ी माता को,
ज्वर से पीड़ित पाया।।2

मित्र मुकुल तैयार खड़ा था,
मन था खेल दिवाना।
कहा मित्र ने आवश्यक है,
माँ को दवा दिलाना।।4

मैय्या का ज्वर शान्त हो गया,
अच्छी औषधि पाकर।
अच्छे मित्र सदा देते हैं,
परामर्श भी हितकर।।6

मातृदेवो भव पाठ की दूसरी रचना

मुकुल नाम का एक बालक था,
सचमुच बहुत विचित्र।

उसी गाँव में था सतीश भी,
जो था उसका मित्र।।

मित्र मुकुल के घर सतीश का,
हुआ अचानक आगम।

ज्वर से पीड़ित माँ को,
देखा नयन हो गये नम।।

माँ बीमार खेलने जाते,
तुमको नहीं शरम।

याद नहीं कल ही हमने,
पाठ पढ़ा था भाई।।

वृद्धों की सेवा करता जो,
मिलती उसे बड़ाई।

बदल गया मन तुरन्त मुकुल,
का औषधि लेता आया।।

असर दवा का हुआ तुरन्त,
आराम बहुत था पाया।

सच्चा मित्र वही होता है,
जो अच्छी बात बताये।।

पथ से भटक गया हो,
उसको राह दिखाये।

पाठ- 3

अस्माकं पर्वाणि

दीपावली

रावण के मद को चूर्ण किया,
वनवास समय को पूर्ण किया।

श्री राम अयोध्या में आये,
घर-घर में छायी खुशियाली।

स्वागत में घर-घर दीप जले,
चल पड़ी तभी से दीवाली।।

लक्ष्मी गणेश का पूजन कर,
हम भोग लगाते हैं उनको।

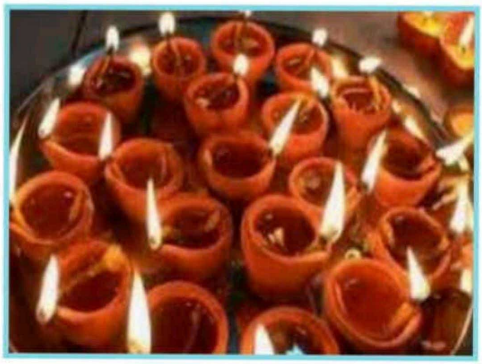

मेवा मिष्ठान खिलाते हैं
अपने स्नेही जन जन को।।

स्वागत में घर-घर दीप जले,
चल पड़ी तभी से दीवाली।।

हो असत्य पर जीत सत्य की,
यही पर्व सन्देश है।
रक्षाबन्धन,होली जैसे,
पर्वो का यह देश है।।

स्वागत में घर-घर दीप जले,
चल पड़ी तभी से दीवाली।।

पाठ- 3

अस्माकं पर्वाणि

गुरुनानक जयंती

2-मास कार्तिक की जब भी
पूनम आती है,
गुरुनानक की जन्म जयन्ती,
सबका हृदय खिलाती है।।

गुरुद्वारों में सबद,कीर्तन
गाये जाते हैं,
शोभा यात्रा होती है सब
खुशी मनाते हैं।

सुन्दर आयोजन होते हैं इस,
भव्य जयन्ती पर।
लंगर में भोजन होते हैं,
इस भव्य जयन्ती पर।।

" क्रिसमस "

3- ईशा के अनुयायियों का,
क्रिसमस है त्यौहार।
दिसम्बर पच्चीस को,
ईशा का है अवतार।।

हम क्रिसमस पर्व मनायें,
आओ!सबको गले लगायें।
इस दुनिया से बैर मिटायें,
सबके मन में प्रेम जगायें।।

गिरिजाघर में प्रार्थना,
करते सब सहकार।
सेंटा क्लॉज बाँटते,
बच्चों को उपहार।।

पाठ- 3

अस्माकं पर्वाणि

इदुलफितर

4-इदुलफितर मुस्लिम जनों,
का है पावन त्योहार
रोजा रखते मास भर,
देते दान-वस्त्र, आहार।

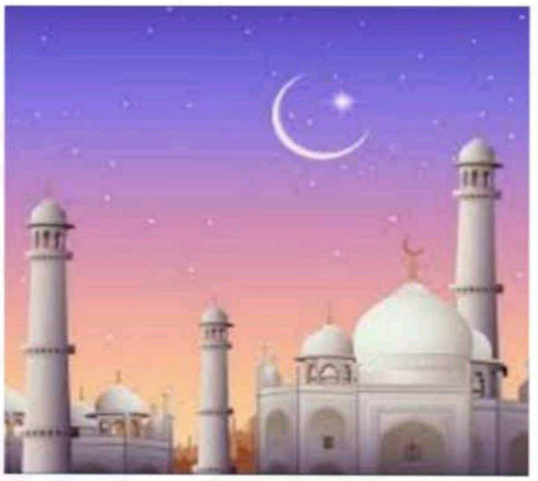

पुण्य धर्म का मास है,
इनका ये रमजान।
एकत्रित होकर सभी,
देते पुण्य अजान।

दिन भर रोजा धारते,
सन्ध्या करते भोज।
मिलकर के खाते सभी,
प्रेम बढ़ाते रोज।।

बालगीत

आओ! बच्चों बातें कर लें,
हम भी कुछ मिष्ठान्न की।

दुकानों पर बनने वाले,
सुन्दरतम् पकवान की।

मधुर मधुरम्,मधुर मधुरम,
मधुर-मधुरम्, मधुर-मधुरम्।।

लड्डू सबने खाये होंगे,
कितने अच्छे लगते हैं।

आओ बच्चों! तुम्हें सिखाये,
इन्हें मोदकः कहते हैं।।

रस से भरे हुए जो गोले,
रसगुल्ले कहलाते हैं।

रसगुल्लों को संस्कृत वाले,
रसगोलकम् बताते हैं।।

रसगोलकम् और मोदकःकी,
सही-सही अब पहचान की।

दुकानों पर बनने वाले,
सुन्दरतम् पकवान की।।

बन्धुबान्धवानां नामानि

आओ! बच्चों सीखें रिश्ते,
संस्कृत में किसको क्या कहते?

पितामहः कहते दादा को,
पितामही दादी।
चाचाजी पितृव्यः होते,
पितृव्या चाची।
खेल-खेल में सीख रहे हैं,
गाते और हँसते।

बेटे को तनयः कहते हैं,
बेटी को तनुजा।
बड़ी बहन अग्रजा कहाती,
छोटी को अनुजा।
रिश्तों से जीवन बनता है,
जीवन से रिश्ते।

भ्राता कहते हैं भाई को,
और बहिन को भगिनी।
पिताश्री को जनकः कहते,
माता को जननी।
मात और पिता के कारण,
बनते हैं सब रिश्ते।

देखो हमने सीखे सब रिश्ते,
गाते और हँसते।
रिश्तों के कारण ही जग में,
सभी प्रेम से रहते।।

संस्कृत में रिश्तों के नाम लिखिए ।

पाठ-4

वर्धमानः महावीर

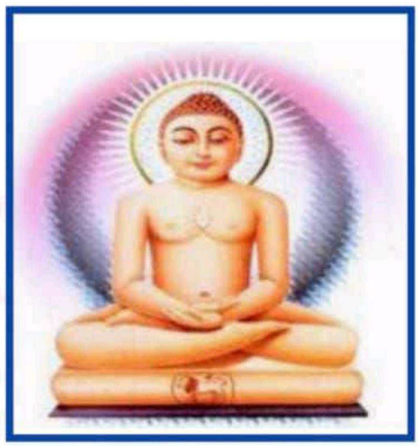

जय वर्धमान!जय महावीर!
जय महावीर! जय वर्धमान!

तुम सत्य अहिंसा के साधक,
मानवता के थे आराधक।

ईश्वर निर्मित हर प्राणी पर,
तुम रखते थे ममता महान।

जय महावीर! जय वर्धमान!
जय वर्धमान! जय महावीर!

सम्यक चरित्र,सम्यक दर्शन,
सम्यक हो ज्ञान,यही चिन्तन।

ब्रह्मचर्य,अस्तेय-अहिंसा,
सत्य-असंग्रह का विधान।

जय महावीर!जय वर्धमान!
जय वर्धमान! जय महावीर!

भारत ही नहीं विदेशों तक,
पहुँचाया तुमने जैनधर्म।

है मूल तुम्हारी शिक्षा का,
सात्विक करें हम सदा कर्म।

तुम थे महान आचरण वान,
जय महावीर!जय वर्धमान!

पाठ-5

स्फुटपद्यानि

1
कौआ काला होता है,
कोयल काली होती है।
दोनों में क्या अन्तर है?
कोई हमें बताता ना।।

दोनों को पहचाना जाता,
जब बसन्त ऋतु आती है।
काँव-काँव करता है कौआ,
कोयल मीठा गाती है।

2
दुष्टों की विद्या केवल,
जग में विवाद उपजाती।
लेकिन सज्जन की विद्या,
सबको ज्ञान सिखाती।।

दुष्टों की सम्पत्ति जगत में,
अंहकार दर्शाती।
सज्जन की सम्पत्ति धरा,
पर काम दान के आती।।

निज विद्या से भला आदमी,
ज्ञान बढ़ाते देखा।
दान करेगा धन पाकर के,
ना इतराते देखा।

दुष्टों की ताकत तो केवल,
पर पीड़ा ही देती।
सज्जन मानव की ताकत,
औरो की रक्षा करती।।

बालगीत

कौए और कोयल के अन्तर,
को मन में तोलो रे।
जीवन में जब भी मुँह खोलो,
तो मीठा बोलो रे।।

काक और कोयल दोनो का,
एक रंग दिखलाता।
ऋतु बसन्त के आने पर ही,
भेद प्रकट हो पाता।।

कोयल कुहू-कुहू करती है,
सबके मन को हरती है।
काँव-काँव ध्वनि कौये की,
मन को कलुषित करती है।।

कोयल जैसा मीठा बोलो,
सबके प्रिय बन जाओगे।
मीठी वाणी से ही जग में,
सदा सफलता पाओगे।।

जीवन में कटुता मत लाओ
अमृत घोलो रे,
जब भी अपना मुँह खोलो,
तो मीठा बोलो रे।।

पाठ-5

स्फुटपद्यानि

3 ☐

क्रोध भाव उपजाता लोभ,
काम मार्ग सिखलाता लोभ।
मोह नाश है करता लोभ,
नीव पाप की धरता लोभ।।

बच्चों रहो लोभ से दूर,
प्रेम करो बस प्रेम करो।
लोभ मार्ग पर न चलकर
चेहरे पर बिखरेगा नूर।।

4 ☐

मुख मण्डल प्रसाद का घेरा,
मन में करती दया बसेरा।
वाणी से अमृत झरता है,
पर उपकार कर्म रहता है,
सब करते है अर्चन उनका,
नित्य-प्रति है वन्दन उनका।।

5 ☐

सत्य से होती धर्म की रक्षा,
धर्म अधर्म का करे विनाश,
अभ्यास करो तुम यदि निरन्तर,
हृदय में हो कल्याणी का वास।।

स्वच्छ रहोगे तो स्वस्थ रहोगे,
दैनिक शिष्टाचार पे अगर दो ध्यान,
कुलवान-कुलीन कहलाओगे,
मारग होगा तुम्हारा प्रशस्त।।

सदा योग से रक्षित विद्या,
और धर्म सच्चाई से,
कुल चरित्र से रक्षा पाता,
रक्षित रूप सफाई से

पाठ- 6

किं तर्तुं जानति भवान्?

बैठ नाव में प्राध्यापक जी,
खुश हो के कर रहे विहार।
इतने में नाविक से बोले,
बतलाओ तुम मुझको सार।

तुमने कभी गणित सीखी है,
ना ना भइया ना...ना...ना न,
तो जीवन का एक चौथाई
कर डाला हिस्सा बेकार।।

नाव चली फिर हौले-हौले,
प्राध्यापक नाविक से बोले।

भौतिक शास्त्र पढ़ा है तुमने
नाविक बोला ना ना भइया ना
तो फिर आधा जीवन तुमने
खो डाला बिल्कुल बेकार।।

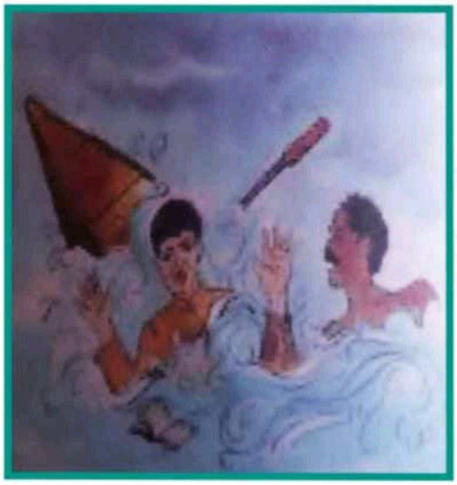

पढ़ी आंग्ल भाषा क्या तुमने?
नाविक बोला ना ना ना ना,
तब तो हुई तीन चौथाई,
जिन्दगानी भी हुई बेकार।।

जोर लहर का आया झोंका,
डगमग लगी डोलने नौका।
नाविक बोला ये बतलाओ,
तैरना तो सीखा है भइया।।

ना ना ना मैं कुछ न जानू,
तब कैसे पार लगाओगे?
तो फिर समझो पूरी जिन्दगी।
आज हुई हाय बेकार।।

पाठ- 7

सुभाषितानि

1
यह अपना वह गैर का,
लघु मन का व्यवहार।
किन्तु उदार चरित्र को,
सब धरती परिवार।।

2
सबसे बडा कष्ट परवशता,
निज वश रहना सुक्ख महान।
सार रूप में जानो इसको,
सुख-दुख का सारा परिज्ञान।।

3
जैसे वर्षा सिन्धु में,
तृप्त भोग भी हैं व्यर्थ।
दीप बेकार दिन में सदा,
अनुचित दान समर्थ।।

4
काव्य शास्त्र के शुचि विनोद में
बुद्धिमान हैं समय बिताते।
किन्तु मूर्ख जन बुराइयों में
फसते-लड़ते या सो जाते।।

5
हे सद्बुद्धि !बड़ो को पाकर,
लघु का मत कर देना त्याग।
जहाँ सुई का काम वहाँ पर,
खड़्ग नहीं आती है काज।

6
विद्या हीन न पूजित होता,
चाहे हो कितना कुलीन।
विद्या का सत्कार विश्व में,
पुजता कभी न विद्याहीन।।

7
वेश,वपु वाणी व विद्या,
और विनय से जो हो भूषित।
पंच वकारो से मण्डित ही,
जग में होता है वह पूजित।।

पाठ- 8

ग्राम्यजीवनम्

गाँव की बात जरा कर ले,
खुशी से अपना मन भर ले।
गाँव का जीवन होता है,
व्यवस्था मय पूरा-पूरा।।

गाँव में प्रायः होते कृषक,
स्वस्थ भी रहते है भरसक।
परिश्रम से करते खेती,
यही खेत्ती उन को सेती।।।

जुताई करते है हल से,
कहीं पर ट्यूब बेल नल से।
अन्न उपजाते है बल से,
सिचाई नहरों के जल से।।

वैज्ञानिक विधियाँ अपनाते,
मिट्टी से सोना उपजाते।
कृषी लाभकारी व्यवसाय,
वैज्ञानिकता बनी सहाय।।

श्यामला हरी भरी धरती,
यहाँ सब ओर दीखती है।
परिश्रम की सुन्दर भाषा,
यहाँ पीढ़ियाँ सीखती हैं।।

पशु-पक्षी देते आनन्द,
पानी हवा मिले स्वच्छन्द।
बदली ग्राम व्यवस्था है,
शिक्षा और चिकित्सा है।।

सबका यदि सहयोग मिले,
नई प्रगति के पुष्प खिलें।
गाँव की बात जरा कर लें,
खुशी से अपना मन भर लें।।

पाठ- 8 (2)

ग्राम्यजीवनम्

बालगीत

मेरे भारत के ध्रुवतारे,
मेरी आशा के रखवाले।
कभी आराम न करने वाले
तुमको प्रणाम, तुमको प्रणाम

गरमी, वर्षा या शीत घाम,
तुम झेल रहे बाधा तमाम।
दिन-रात परिश्रम करते हो,
चलते ही रहते सुबह-शाम।
तुम चंदा से उजियारे,
तुमको प्रणाम, तुमको प्रणाम।.

धरती को नव उल्लास दिया,
तुमने मधुमय मास दिया।
सदियाँ जिसको दोहरायेगी,
वह गौरवमय इतिहास दिया।
तुम अपनी धुन के मतवारे,
तुमको प्रणाम, तुमको प्रणाम।।

तुमको कोई परवाह नहीं,
न हँसने की अथवा रोने की।
तुम कठिन परिश्रम करके,
धरती में उगा रहे फसलें।
करते करतब न्यारे-न्यारे,
तुमको प्रणाम, तुमको प्रणाम।।

पाठ- 9 (1) भव्या भागीरथी

हिमगिरि की हिममय गोदी,
में विचरण करती हो।
मुक्त भाव से तुम समतल,
में विहरण करती हो।।

लोको को पवित्र करती हो,
मिल जाती सागर हो।
दिव्येगंगे! नीर तुम्हारा,
सबको सुखकर हो।
जय-जय माँ गंगे !
जय-जय माँ गंगें

जाने कौन पुण्य जागे?
जो पुण्य देश में जन्में।
और तुम्हारे जलकण पाकर,
पाप मिटे क्षण में।
हरिद्वार, काशी के थल हैं
गाते तव स्तुति।
तीर्थों का राजा प्रयाग भी
तेरे तट स्थित ।
जय-जय मों गंगे!
जय -जय माँ गंगे!

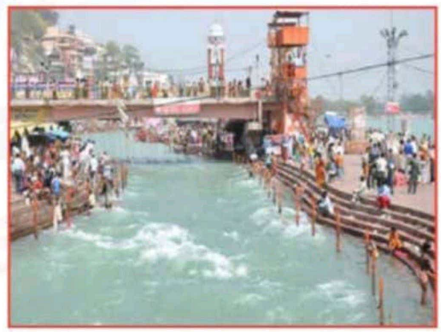

पाठ- 9 (2) भव्या भागीरथी

मधुर अन्न फल देती,करती जन-जन का पालन।
मधुमय जल से करती, भारत भूमी का सिंचन।
खेल रहे तेरी गोदी में, मानव बन बच्चें।
सहज धन्य है उनके जीवन, शुभ्रे तरल तरंगे।।
जय-जय माँ गंगे! जय-जय माँ गंगे!

नहरों के द्वारा तेरा जल, बहुत दूर तक जाता।
खेतों का सिंचन करके है, फसलों को लहराता।।
नावें चलती, तेरे जल में,यात्रा सब करते।
उपकारों को पा जननी, हम पद वन्दन करते।।
जय-जय माँ गंगे! जय-जय माँ गंगे!

पुण्ये गंगे!अगर जन्म हो, फिर इस जग मे मेरा।
फिर से ये ही धरती होवे, क्रीडास्थल मेरा।।
तेरे तट पर विहरूँ, तेरे जल का सेवन हो।
देव नदी!तेरे ही आश्रित, मेरा जीवन हो।।
नही अन्य कोई अभिलाषा,
जय जननी गंगे! जय-जय माँ गंगे।

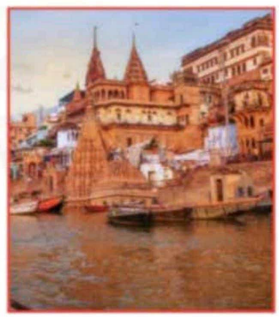

पाठ- 10 शत्बुद्धि-सहस्त्रबुद्धि- कथा

शतबुद्धि सहस्र बुद्धि था,जिनका नाम,
ऐसी दो मछलियाँ रहती थीं, जलाशय में अविराम।

मेढक एक मित्र था उनका, एक बुद्धि नाम था जिसका।
एक दिवस आया मछुआरा, जोर जोर से बोला,
कल आकर मछली पकडूँगा, अच्छा मछली टोला।

एक बुद्धि मेढक यूँ बोला, उठो!जलाशय बदलो,
मछुवे के आने के पहले, तुरन्त यहाँ से निकलो।

दोनो ने मेढ़क का कहना, नहीं जरा सा माना,
मछुवारे ने जल जीवों का, पकड़ा सकल घराना।

एक बुद्धि मेढक ने अन्य जलाशय को अपनाया,
बुद्धी के बल काटी उसने मछुवारों की माया।

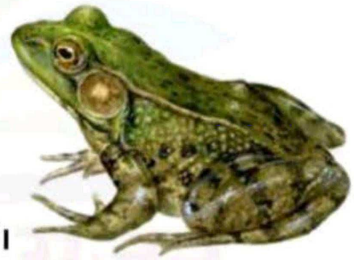

शत बुद्धि,सहस्र बद्धि, पकड़ी गयी मछलियों दोनों,
मछुआरे के जाल बीच फिर जकड़ी गयी मछलियाँ दोनों।

मेंढक निज पत्नी से बोला,एक बुद्धि का देखा काम,
शत बुद्धी-सहस्र बुद्धी, देखो यह होता अंजाम

समय देखकर जो चेतेगा, संकट से वह ही जीतेगा।

पाठ- 11 रामभरतयोः मेलनम्

पर्णकुटी में राम और सीता भी स्थित हैं,
और कुटी अनुज लखन, से अभिरक्षित है।

फिर सुमन्त के साथ, भरत जी आते हैं,
कहाँ हमारे आर्य राम हैं? कह-कहकर चिल्लाते हैं।।

तब सुमन्त जी बोले, यहीं राम है सीता-लक्ष्मण।
कहा भरत ने मैं आया हूँ, करो निवेदन।।

मैं कृतघ्न-निष्ठुर, पापी हूँ, और राज्य का लोभी हूँ।
फिर भी हूँ राघव का भाई, मैं चाहे जो भी हूँ।।

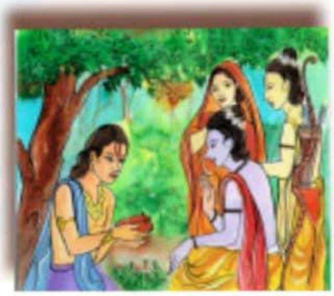

मुझमें रुप तुम्हारा भइया, ऐसे चमक रहा है।
जैसे दर्पण में कोई मुख, मण्डल दमक रहा।।

सुना आर्तस्वर भरत भ्रात, का राघव ड़ोल उठे।
स्वागत हेतु सिया खुद, जायें ऐसा बोल उठे।।

राम भरत का मिलन, परस्पर अभिवादन।
दृश्य देख सबकी आँखो से, छलक पड़े जल- कण।।

कहा भरत ने आर्य मुझे, केवल दो वर देना।
चौदह वर्षों बाद राज्य, अवध का वापस ले लेना।।

माँग रहा हूँ चरण पादुका, प्रभु इनकार न करना।
अनुज भरत की नम्र प्रार्थना, अस्वीकार न करना।।

पाठ- 12 प्रियं भारतम्

प्रकृति से सुन्दर जो बहुत विशाल है,
सुषमा से पूर्ण गले नदियों की माल है।
हिमगिरि ललाट और पद रत्नाकर हैं,
दर्शनीय भारत सदैव सुखकर है।।

भण्डार धन का धरा पर प्रमुख है,
देवलोक जैसा देता जो सुख है।
विदेशों में जिसका,होता यश गान है,
मेरा प्रिय भारत पूज्य है महान है।।

अनेक बेष हैं यहाँ प्रदेश हैं अनेक
भाषाएँ बहुत और रूप भी अनेक।
लेकिन भारत के लोग सब एक हैं।
रक्षणीय भारत यही मात्र टेक है।।

देश को नमन हम करते सादर हैं,
मात्र राष्ट्र धर्म को देते आदर हैं।
इसके लिये ही जीवन का अर्पन है,
वन्दनीय भारत! तेरा वन्दन है।।

पाठ- 13

वीरोअभिमन्यु

आओ! हम इतिहास बतायें
अपने हिन्दुस्तान का,
वीर बाँकुरे अभिमन्यु के,
साहस मय बलिदान का।।

चला अठारह दिन तलक,
महाभारत का संग्राम।
दस दिन करके घोर रण,
भीष्म गिरे धड़ाम।।

भीष्म गिरे धड़ाम,
द्रोण थे कौरव नायक।
चक्रव्यूह बनाकर कर डाला,
पाप बड़ा भयानक।।

अर्जुन जिसका ज्ञाता,
लेकिन दूर बहुत था।
पाण्डवों का पूरा दल बेवश-
बहुत मजबूर बहुत था।।

तब सोलह वर्ष अभिमन्यु ने,
रण भार उठाया।
चक्रव्यूह भेदने वीर वरों
के सम्मुख आया।।

उसके भीषण रण कौशल से,
कौरव दल घबराया।
अभिमन्यु ने युद्ध क्षेत्र में,
भीषण ध्वंस मचाया।।

द्रोण,कृपा,अश्वत्थामा,
कर्ण आदि वीरो ने।
कृत वर्मा के संगवृहद बल,
आदि समर धीरो ने।।

शस्त्रहीन अभिमन्युवीर का,
बध कर डाला रण में।
बलिदानी क्षत्रिय की,
गाथा गूँज गई कण कण में।।

युग युग झण्डा फहरायेगा,
सिंह सदृश बलवान का।
वीर बाँकुरे अभिमन्यु के,
साहसमय बलिदान का।।

पाठ- 13 (2)

वीरोअभिमन्यु

स्मरणीयम

बच्चों तुम सभ्य बनो,
और बनो तुम धीर।

शिष्टता का पालन करो,
और बनो तुम बलवीर।।

हृष्ट रहकर और पुष्ट रहकर,
शान्त बनो और सौम्य रहो।

पावन सी मुस्कान सजाकर,
जीवन सफल बनाओ तुम।।

स्नान समय पर तुम कर लो,
ध्यान समय पर भी धर लो।

मधुर-मधुर जलपान करो,
छोटे जन का मान करो।।

पढ़ने में भी ध्यान धरो तुम,
लोगो का सम्मान करो तुम।

समझोगे गर तुम ये बात,
सफलता पाओगे दिन-रात।।

चतुर्दशः पाठः --वाराणसी नगरी

आओ! हम काशी का चित्र दिखाते हैं,
दूर देश तक जिसके धर्म ध्वज फहराते हैं।
वरुणा और असी का संगम, भारत की संस्कृति का उद्गम।
गाते जिसे निगम या आगम, शास्त्र-पुराण आदि भी। जिसकी
महिमा गाते हैं,
आओ! उस काशी नगरी का चित्र दिखाते हैं।
दूर देश तक जिसके धर्म ध्वज फहराते हैं।।
बाबा विश्व नाथ का मन्दिर,
अन्न पूर्णा जी का मन्दिर।
संकट मोचन धाम यहीं पर,
विविध मन्दिरों के दर्शन।
से मन खिल जाते है,
आओ! हम अपनी काशी का
चित्र दिखाते हैं।
दूर देश तक जिसके धर्म ध्वज फहराते हैं।।
तुलसीजी का मन्दिर पावन,
भैरव जी का मन्दिर शोभन।
पुण्य तीर्थ है पिशाच मोचन,
अपने अपने पितरों का सब। यहाँ श्राद्ध कराते हैं,
आओ! हम अपनी काशी का चित्र दिखाते हैं।
शिव रात्री को लगता मेला,
जो दुनिया भर से अलबेला।
विश्वनाथ दर्शन का रेला,
जय जय शंकर!हर हर गंगे!
शब्द सुहाते हैं।
आओ! हम काशी नगरी का चित्र दिखाते हैं।।
वाराणसी केन्द्र विद्या का, संस्कृत की पावन शिक्षा का।
भारतीय संस्कृति रक्षा का,
जग विख्यात विश्व विद्यालय शोभा पाते हैं।
आओ! हम अपनी काशी का चित्र दिखाते हैं।।

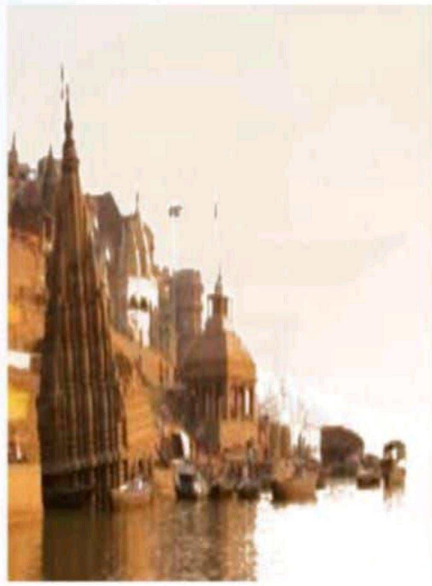

चतुर्दश: पाठ: --वाराणसी नगरी

तुलसी और कविरा आए
अपने मन में भक्ति बसाये।
रैदासा भी तान सुनाये,
भारत माता जैसे मन्दिर।
अलख जगाते हैं
आओ! हम काशी का पावन चित्र दिखाते हैं,
दूर देश तक जिसके धर्म ध्वज फहराते हैं।।
घाटों की नगरी है काशी,
विश्व नाथ के सब विश्वासी।
सब पूजन -वन्दन अभ्यासी,
दूर देश तक जिसके धर्म, ध्वज फहराते हैं।
आओ!हम काशी नगरी का
चित्र दिखाते हैं।।

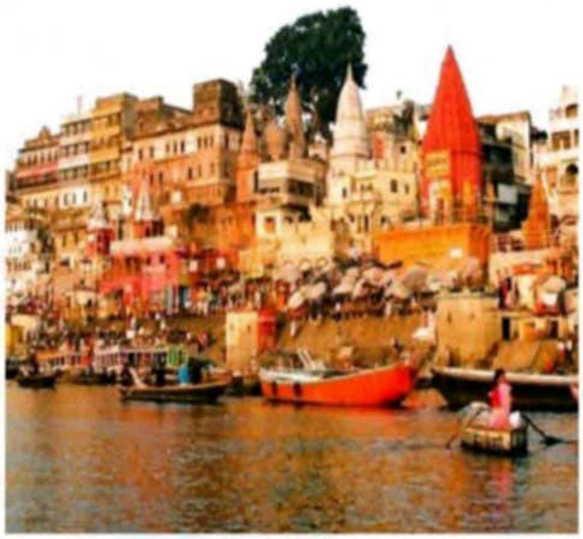

श्रीकृष्ण स्तुति

हे कृष्ण! हे सच्चिदानन्द!
जग के पालनहार तुम्हीं हो।
पुराण पुरुष! शाश्वत सत्य!
जग के कर्णाधार तुम्हीं हो।
चर,अचर,जगत में व्याप्त तुम्हीं,
वेदों के हो आधार तुम्हीं।
ज्योतिमय कीर्ति पन्थ तुम्हीं।
हे कन्हैया! वंशी बजैया!
पाञ्चजन्य शंख बजाकर तुमने,
अर्जुन को दिव्य ज्ञान दिया।
जब भ्रमित-अधीर हुए पार्थ,
महाभारत के सच का विस्तार किया।
हे अच्युत! हे गोविन्द!
हे युगदृष्टा! हे अगम्य तेज!

पाठ- 15 गीतावचनामृतानि

1- हे प्रभो! आप को
अनगिनत बार प्रणाम।।
आदि देव हो तुम ही जग के,
तुम ही पुरुष पुराण।
महाप्रभु तुम हो जग के,
शाश्वत परम् निधान।।
ज्ञान योग्य तुम ही विश्व के,
तुम ही हो जानन हारे।
परमधाम हो तुम ही जगत के,
अगणित रूप तुम्हारे।

2- हे अर्जुन! उपदेश तुम्हें मैं
देता हूँ,
जब-जब होती ग्लानि धर्म की।
अनाचार जब-जब बढ़ता है,
तब-तब हे पार्थ! मेरा हाथ।
स्वयं को गढ़ता है,
इस धरा धाम पर जन्म स्वयं
मैं लेता हूँ।।

3- करता परित्राण साधुओं का,
करता विनाश मैं दुष्टों का।
स्थापना धर्म की मैं करता,
हे अर्जुन! जानो इसलिये,
युग-युग में रूप धरा करता।।

4- हे अर्जुन! अपने जीवन में,
सुख-दुःख को समान मानो।
लाभ-हानि या हार-विजय को,
सम करके पहचानो।
अगर युद्ध में जुट जाओगे,
पाप नहीं फिर तुम पाओगे।।

5- वस्त्र पुराने छोड़ नयों,
को धारण करता मानव।
जीर्ण तनों को त्याग आत्मा,
तन धारण करती अभिनव।

6- आत्मा का इस तरह रूप
शस्त्र नहीं काटते इसे।
और पावक नहीं जलाता है,
जल कब गीला कर पायेगा?
मारुत नहीं सुखाता है।
अजर-अमर इसका स्वरूप है।

7-मात्र कर्म के अधिकारी हो,
हल्के-भारी कभी नहीं।
बनो न फल के हेतु कभी,
अकर्मो के रागी कभी नहीं।।

पाठ- 16 अमोघं तद् बलिदानम्

जय हो, जय हो कारगिल वीर,
भारत माँ के सच्चे सुधीर।

हम शान्ति मार्ग के अनुयायी,
आक्रमण किसी पर कब करते?
जब शत्रु चुनौती देता है
रण से भी पीछे कब हटते?
जय हो, जय हो कारगिल वीर,
भारत माँ के सच्चे सुधीर।।

कारगिल और मस्कोह, द्रास,
रिपुदल जब देखा आस-पास।
पाकिस्तानी उन्मादी दल जब,
करता था अतिक्रमण प्रबल।
भारत के विविध क्षेत्रों पर,
उसने अधिकार जमा डाला।

सीमा से करके छेडछाड,
भारत का शौर्य जगा डाला।
बैरी दल से लोहा लेने,
तैयार हुए फिर राष्ट्र वीर।
जय हो, जय हो कारगिल वीर,
भारत माँ के सच्चे सुधीर।।

पाकिस्तानी अतिक्रमण सभी,
वीरों ने तुरन्त हटाये थे।
बैरी दल से लोहा लेके,
कितनों ने प्राण गँवाये थे।
योगेन्द्र और विक्रम बत्रा,
संजय मनोज से समर धीर।

मरणोपरान्त सम्मानित हो,
जग में कहलाये परमवीर।।

पाठ- 17

रक्षत बलिका: पाठयत बालिका:

रक्षा करो बालिकाओं की,
आगे उन्हें बढ़ाओ।
सुखमय जीवन देने के हित,
उनको खूब पढ़ाओ।1।

जनहित में भारत शासन ने,
स्थिर किया प्रयोजन है।
जनवरी मास की चौबीस तिथि
बालिका दिवस आयोजन है।2।

ऐसी योजना का मिलकर के,
पूरा लाभ उठाओ।
रक्षा करो बालिकाओं की,
आगे उन्हें पढ़ाओ।3।

अवसर उन्हें समान प्राप्त हों,
हुई योजना संचालित।
कस्तूरबा गाँधी बालिका
विद्यालय
जगह-जगह हैं स्थाप।4।

छः से चौदह वर्षों की,
बालिकायें वहाँ पर पढ़तीं हैं।
परिसर में ही खातीं-पीतीं,
परिसर में ही रहती हैं।5।

जीवन उनका सुखमय बीते,
ऐसी राह दिखायें।
सुखयय जीवन देने के हित,
उनको खूब पढ़ाओ।6।

हर बालिका आर्थिक ढंग से,
बने सफलतम भाई।
सुकन्या समृद्धि योजना,
इसी हेतु है आयी।7।

धनलक्ष्मी योजना देश में,
चला रहा शासन है।
जन्म बालिका का होने पर,
आर्थिक प्रोत्साहन है।
आओ! इस संकल्प का,
मिलजुल कर लाभ उठायें।8।

पाठ- 18

एत बालका:

आओ! बच्चों स्वयं चलें,
कठिनाई को दूर करें।

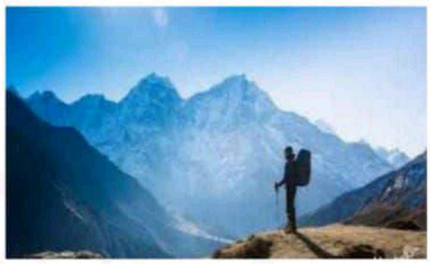

आओ! लायें नभ के तारे,
पथ अँधियारा दूर करें।

आओ! पर्वत को भी लाँघें,
शक्ति प्रदर्शन करें।

आओ! सागर ओर चलें,
जीवन कलश भरें।

आओ! अतुलित शक्ति प्राप्त कर,
भाग्य स्वयं का बदलें।

आओ! तपस्या करके नूतन,
सफलता पूर्ण करें।

करे लोक की सेवा पूरी,
बिना लोभ के अमृतपाई बनें।

आओ! लोगों के मन जीते,
जीवन सफल करें।

नये मार्ग पर चल कर के,
भ्रान्ति दूर करें।

आओ! कल्याणों को बाँटे,
सकल जगत के कष्ट हरें।

पाठ- 19 अहम् संगणकः अस्मि:

एक छात्र कक्षा में बैठा,
करता था कुछ काम।
आयी कुछ आवाज तो,
उसने पूछा "क्या है तेरा नाम"
मैं हूँ कम्प्यूटर, मैं हूँ कम्प्यूटर।

नाम हमारा कम्प्यूटर है,
घर-घर में रहता हूँ।
विद्यालय में भी रहता हूँ,
हर बच्चा ये कहता है।।

मैं सुनना चाहता बताओ,
ओ कम्प्यूटर भाई!
देकर ध्यान सुनो तुम,
इसमें छिपी भलाई।।

मैं सूचनायें इकट्ठी कर...,
और व्यवस्थित करता।
आवश्यकता पड़ने पर,
सबको वितरित करता।।

विद्यालय के परीक्षा कार्य में,
अंकपत्र निर्माण।
और प्रमाणपत्र देने से,
है मेरी पहचान।।

इण्टरनेट माध्यम से मैं,
देता सारा ज्ञान।
कैसा इण्टरनेट बताओ?
मैं बालक अज्ञान।।

अब मैं तुम्हें बताता हूँ,
कि क्या है इण्टरनेट?
इण्टरनेट माध्यम से है,
दुनिया लाइक नैट।।

घर बैठे ही रेलयान और,
वायुयान आरक्षण।
चीजों का सारा क्रय-विक्रय,
संदेशों का प्रेषण।।

वेबकैम द्वारा ही सशब्द,
चित्र रहित संदेश।
देता हूँ मैं भेद सभी को,
मेरा काम विशेष।

दुनिया में क्या-क्या होता है?
मैं ही बतलाता।
क्षण में ही सूचित करता,
मैं कभी नहीं शरमाता।।

सुन्दर अन्तर जाल,
व्यवस्था सुन्दर है जी।
धन्यवाद तुमको मेरे,
प्यारे कम्प्यूटर जी।।

कम्प्यूटर तुम कम्प्यूटर,
तुमसे सघन विकास।
यत्र-तत्र-सर्वत्र तुम्हारा,
फैले मधुर प्रकाश।।

प्रवीणा दीक्षित